जीवन में सदाचार

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय जीवन दर्शन में सदाचार का बहुत महत्व है। सदाचार का अर्थ है– अच्छा आचरण। हमारा आचरण ऐसा होना चाहिए जिससे किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो। भारतवर्ष आचार प्रधान देश है। यहां आचार की महत्ता प्राचीन काल से ही मान्य रही है। आचार सम्पन्न व्यक्ति का ही जीवन परिष्कृत एवं व्यवस्थित होता है। आचार के आधार पर अवलम्बित विचार जीवन का परिष्कारक होता है। शिष्ट व्यक्तियों द्वारा अनुमोदित एवं बहुमान्य रीतिरिवाजों को आचार कहते हैं। अतीतकाल में आचार शब्द बिना किसी विशेषण के भी श्रेष्ठतम आचरण के लिये प्रयुक्त हुआ है। शाब्दिक दृष्टि से आचार का अर्थ है–'आचरणम् आचारः'। मनुष्य का जो आचरण है, वही आचार है। यह सदाचार का द्योतक है। सदाचार का विरोधी कदाचार है। सदाचार यदि अनुष्ठेय है तो दुराचार हेय है। दुराचार मानव के पतन का प्रमुख कारण है। इसलिये यह सर्वतोभावेन त्याज्य है। सदाचार से मनुष्य प्रेय के साथ–साथ श्रेय को प्राप्त करता है, किन्तु कदाचार से किसी प्रकार प्रेय का लाभ हो भी जाय, तो भी वह अधोगति का मूलकारण होता है। सदाचारी आचार का पालन करते हुये श्रेयस् को प्राप्त करता है, और अन्त में परमगति को प्राप्त करता है–'आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्। उपनिषदों में भी श्रेय और प्रेय का वर्णन है, किन्तु श्रेय को श्रेयस्कर माना गया है–

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत–
स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते
प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।

श्रेय और प्रेय दोनों ही मनुष्य के सामने आते हैं। बुद्धिमान् मनुष्य उन दोनों के स्वरूप पर भलीभांति विचार करके उनको पृथक्–पृथक् समझ लेता है। बुद्धिसम्पन्न मनुष्य परमकल्याण के साधन श्रेय को ही श्रेष्ठ समझकर ग्रहण करता है, परन्तु मन्द बुद्धि मनुष्य लौकिक योगक्षेम की

इच्छा से भोगों के साधन रूप प्रेय को अपनाता है। भारत प्रारम्भ से ही विभिन्नताओं का देश रहा है; किन्तु यहां की सांस्कृतिक उदात्तता के कारण इनमें एकता का ही स्वर मुखर रहा। उपनिषदों में कहा गया है कि जो दुश्चरित्र हैं, जिनका मन अशान्त और विक्षिप्त है, वे प्रज्ञान द्वारा भी आत्मा को नहीं प्राप्त कर सकते हैं ऐसे लोगों को बार–बार इस भवसागर में जन्म और मरण के बन्धन में बधना पड़ता है–

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।

नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।

शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित सदाचरण एवं भगवच्चरणों की पूजा तथा भक्ति पवित्र करने वाली है और सभी प्रकार के पापों का नाश करने वाली है–

चरणं पवित्रं विततं पुराणं येन पूतस्तरति दुष्कृतानि।

तेन पवित्रेण शुद्धेन पूता अतिपाप्मानमराति तरेम्।।

पांच यमों और पांच नियमों में सभी प्रकार के सदाचार का अन्तर्भाव हो जाता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, दया, सरलता, क्षमा, धृति, मिताहार और शुचिता–ये दस यम हैं तथा तप, सन्तोष, आस्तिकता, दान, ईश्वरपूजन, शास्त्रीय सिद्धान्त का श्रवण, लज्जा मति, जप एवं व्रत ये दस नियम हैं। शीतोष्णाहार, निद्रा पर विजय, सर्वदा शान्ति, निश्चलता तथा विषयेन्द्रियनिग्रह–ये यम हैं तथा गुरुभक्ति, सत्यमार्गानुरक्ति, मनोनिवृत्ति, सुखागत वस्तु आत्मा का अनुभव, सन्तोष, निसंगता, एकान्तवास, कर्मफल की अभिलाषा का न होना तथा वैराग्य–ये नियम हैं। सदाचार के रूप में पालनीय धर्मों का वर्ण, आश्रम, आयु, अवस्था, जाति, लिंग आदि भेद से वर्णन किया जा सकता है। सत्यनिष्ठा, सत्यव्रत एवं सत्याचरण के अभाव में सभी व्रत, कर्म एवं 'आचरण' निष्फल हो जाते हैं। 'सत्य' ही ब्रह्म है, सत्य ही धर्म है। इस सत्य धर्म से बढ़कर कुछ नहीं है–**सत्यमेवब्रह्म धर्मात् परतरं नास्ति यो वै धर्मः सत्यं वै तत्।** जैसे पृथ्वी के नीचे दबी हुयी सम्पत्ति का ज्ञान उक्त भूप्रदेश के ऊपर घूमने–फिरने वाले व्यक्ति को नही होता, इसी प्रकार नित्यसुषुप्त दशा में ब्रह्म के समीप जाने वाली प्रजा को भी अपने हृदय में अन्तर्यामीरूप से वास करने वाले ब्रह्म का ज्ञान असत्य से आच्छदित होने के कारण नहीं

होता। मानव द्वारा किया गया अच्छा कर्म सदाचार कहलाता है। सदाचार में स्वयं को सुख मिलता ही है, साथ ही साथ अन्य प्राणियों को भी सुख और आनन्द मिलता है। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो अपने प्रतिकूल हो वैसा आचरण दूसरे प्राणियों के साथ नहीं करना चाहिए। मानव–मानव से प्रेम करना सदाचार का सबसे अच्छा उदाहरण है। जीयो और जीने दो की भावना में सदाचार परिलक्षित होता है। पृथ्वी पर जितने भी प्राणी हैं सबमें आत्मदर्शन करना और सबको अपने समान मानना सदाचार का लक्ष्य है। सदाचार में जीव हिंसा का पूर्णतः निषेध रहता है। अहिंसा परमोधर्मः अर्थात् अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है, इसके समान और कोई धर्म नहीं है, यह समझकर सभी प्राणियों में जीवदृष्टि से विचार करना सदाचार है।